एम० ए० चतुर्थ सत्र - यूरोपीय चित्रकला

'बरोक कला'

हाइन्रिश वोल्फिन अपनी पुस्तक "पुनरुत्थान व बॅरोक" में निम्न भेदों के आधार पर पुनरुत्थान की कला व बॅरोक कला का तुलनात्मक अध्ययन करके बॅरोक कला के प्रति दृष्टिकोण बदलने का प्रयत्न किया निम्न वे भिन्नताओं के आधार पर तुलना की -

1- रंग प्राधान्य व रेखात्मक - बॅरोक कला रंग प्रधान है जबकि पुनरुत्थान कालीन कला रेखा प्रधान रही है।

2- गहराई व समतलत्व - बॅरोक कलाकारों ने चित्रों में छाया प्रकाश के माध्यम से गहराई को भी दर्शाया जबकि पुनरुत्थानीय कला में चित्रों में समान तल का प्रयोग चित्रकारों ने किया किसी प्रकार की गहराई नहीं दर्शायी।

इसके अतिरिक्त निम्न विशेषताएँ जो दोनों में भिन्न भिन्न थी -

3- मुक्त आकार व बद्ध आकार

4. अस्पष्टता व स्पष्टता

5. एकता व विविधता, पूर्णतया सुनिश्चित न होते हुए भी वोल्फिन वोल्फिन इस विश्लेषण से बॅरोक कला के प्रति दृष्टिकोण को बदलने में काफी सफल भी हुये।

अब 'बॅरोक' शब्द का प्रयोग अप्रतिष्ठात्मक अर्थ में प्रयोग नहीं होता या उसके पृथक अस्तित्व को स्वीकारा जाने लगा। 'बॅरोक' शब्द के अर्थ के मुख्यता दो अभिप्राय होते हैं ऐसा आभास हुआ- पहले अभिप्राय से नवनिर्मित कला के नये दृष्टिकोणों की ओर संकेत किया जाता है दूसरे अभिप्राय यूरोपीय कला की उस धारा की ओर संकेत किया जाता है जिसमें प्राचीन शास्त्रीय कला का अनुसरण

Scanned with CamScanner

समाप्त किया, जिनके बारे में विद्वानों ने भिन्न मत दिये सभी का मतासार यह था कि पुनरुत्थान की कला में सन्तुलन व स्थायित्व है जबकि बरोक कला का लक्ष्य कर्णवत संयोजन व गतित्व था बरोक कला में छाया प्रकाश के प्रयोग से घनत्व का चित्रण चित्रों में हुआ जबकि पुनरुत्थान की कला में रेखा की प्रधानता थी।

बरोक की कला के विकास में तीन प्रमुख कारण या प्रेरणायें रही — जिनमें कैथोलिक चर्च प्रमुख थी जिसने कला को धर्मप्रसार का एवं प्रार्थना उपासना को आकर्षक बनाने का साधन माना था। दूसरी प्रेरणा थी वैज्ञानिक प्रगति व सामाजिक विकास जिसके कारण कलाकारों के दृष्टिकोण में काफी परिवर्तन आ गया था बरोक कला को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाली तीसरी प्रेरणा थी उस समय का सशक्त व संघर्ष राजतन्त्र जो तब तक ईसाई धर्म के आधिपत्य से पूरी तरह मुक्त हो गया था और अब धर्म के प्रचार प्रसार हेतु धार्मिक कला को मानवतावादी व सजीव बनाकर उपासकों को आकर्षित करने का कार्य आरम्भ हुआ।

इसके फल स्वरूप जिस नवीन, गतिपूर्ण, मनमोहक शैली का उदय हुआ वह 'बरोक' कला शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। तथा कैथोलिक चर्च के धार्मिक क्रियाकलापों में काफी सहायक सिद्ध हुई। रीतिवाद की संकीर्णता से मुक्त होकर कला एक विशिष्ट वर्ग की न होकर सम्पूर्ण समाज के लिये थी। अधिक लोकाभिमुख हो गयी थी।

सोलहवीं व सत्रहवीं सदी तक कला परिवर्तन के अनेक दौरों से गुजरी धर्म-प्रसार के लिये नया अवसर मिलने पर 'बरोक' कला उदार हो चली। वैज्ञानिक विकास में विशेष रूप से गणित, खगोल शास्त्र जैसे विषयों में सम्बंधित अध्ययन में गति आगयी थी मानव में आत्म विश्वास बढ़ा व जीवन-दर्शन में मानवतावादी को को प्रधानता मिल रही थी।

Scanned with CamScanner